Vol. 12, Issue 09, September: 2024
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण में आदिवासियों की भूमिका

प्रो.(डॉ.) शिवानी श्रीवास्तव
मार्गदर्शक,
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस महिला महाविद्यालय
अलीगंज, लखनऊ

अंकिता सिंह
शोधार्थी,
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस महिला महाविद्यालय
अलीगंज, लखनऊ

सारांशः

सभ्यताओं और संस्कृति की जननी भारत की भूमि अपनी परंपरा और मूल्यों के लिए आज भी प्रसिद्ध है। सदियों से चले आ रहे, स्वदेशी ज्ञान और स्थानीय सांस्कृतिक ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी कहानियों, गीतों, लोक–कथाओं कहावतें, सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से प्रसारित हो रही है। जो कि प्राकृतिक स्रोतों को कम किए बिना प्रथ्वी के संरक्षण में अपना योगदान दे रही है। जलवायु परिवर्तन, भूमि प्रबंधन, भूमि संरक्षण जैसे गंभीर सतत विकास के लक्ष्यों की समस्याओं का समाधान करने और वैज्ञानिक तकनीकी अनुसंधान की क्षमता की उपज में अपना श्रेय दे रही है और इस पारंपरिक ज्ञान को आज के आधुनिक युग में सबसे ज्यादा आदिवासी लोगों को संजोए हुए है। परन्तु आधुनिकता पश्चात् सभ्यता वैश्वीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण का प्रभाव उनके जीवन शैली पर भी पड़ रहा है। जिसके प्रभाव से हमारी संस्कृति और परंपराएं कहीं न कहीं न खतरे में है।

की–वर्डः *भारतीय ज्ञान परंपरा, आदिवासी, जीवन–शैली, संस्कृति और सभ्यता*

१.प्रस्तावना

भारत की अखण्डता को बनाए रखने में एक भाग भारतीय ज्ञान प्रणाली का भी है, जो स्वदेशी लागों की पहचान, सांस्कृतिक विरासत और अजीविका का मूल–तत्व है और यह लोगों के नवाचारों और प्रथाओं से भी जुड़ा है। भारतीय ज्ञान न केवल लोगों के लिए मूल्यवान है, बल्कि उनके दैनिक जीवन और जीवन शैली के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह भारतीय संस्कृति वेद, तंत्र और योग का संगम है। हमारी भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में सबसे पुरानी ज्ञान परंपरा है। जिसने वैश्विक स्तर पर कई वैज्ञानिकों और दार्शनिकों को प्रभावित किया है और अभी भी कर रही है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था, ''हम प्राचीन भारतीयों के बहुत आभारी हैं, जिन्होंने हमें गिनती करना सिखाया। जिसके बिना अधिकांश आधुनिक वैज्ञानिक खोंजें असंभव होती।''

परमाणु बम के जनक प्रसिद्ध अमेरिकी सैद्धान्तिक भौतिक विज्ञानी श्री जे.राबर्ट ओपेन हाइमर ने प्राचीन संस्कृत भाषा सीखी और भगवत गीता पुस्तक को अपनी पसंदीदा पुस्तक माना और इससे वे बहुत प्रभावित हुए।[1]

परन्तु समय के परिवर्तन ने हमारी पंरपरा और संस्कृति की नींव को हिला दिया है। आधुनिकता की दौड़ और पाश्चात् शैली का प्रभाव हमारे जीवन का मुख्य अंग बन गयी है और हमारी ही संस्कृति और सभ्यता हमसे ओझल हो गई है। हमें अपनी संस्कृति, जड़ी–बूटियों, नीम, हल्दी और गोमूत्र का ख्याल तब आता है जब कोई विदेशी उन्हें पेटेन्ट करवा लेता है। जैसे समय की भाग–दौड़ में हमने

योग को नकार दिया और जब वही योगा बनकर हमारे सामने आया तो हम उसके दीवाने बन बैठे हैं। हमने अपने आचरण और व्यवहार से राष्ट्रपिता गॉधी जी के आदर्शों को तिलाँजलि दे रहे हैं, पर अमेरिका में पिछले कुछ वर्षों में करीब पचास विश्वविद्यालयों और कॉलेजों ने गॉधीवाद पर कोर्स आरम्भ किए हैं।(2) परिवर्तन हमारी प्रकृति हैं परंतु यह हमें विनाश की ओर ले के जा रही है और हम अपनी प्रकृति को नष्ट कर रहे हैं। हमारी ही सभ्यता हमारे जीवन मूल्यों से बहुत दूर हो जा रही है। जिसमें विशेष भाग युवा पीढ़ी है और सबसे ज्यादा नुकसान आने वाली पीढ़ियों का है। हमारा पारम्परिक ज्ञान वर्तमान में केवल कुछ भाग में संरक्षित रह गई है। वर्तमान में यह केवल कुछ भाग में संरक्षित रह गई है, जिनमें मुख्य रूप से आदिवासी लोग हैं, जो आज भी अपनी पंरपरा और संस्कृति के साथ जीवन–यापन कर रहे हैं। लेकिन नगरीकरण, तकनीकी और आर्थिक समस्याओं के कारण उन्हें भी अब कहीं न कहीं कुछ समझौते करने पड़ रहे हैं। फिर वे अपनी संस्कृति और सभ्यता से किसी न किसी रूप में जुड़े हुए हैं। वो चाहे कृषि तकनीकी, खाद्य पंरपरा, त्यौहार या रीति–रिवाज हो। वे आज भी अपनी और भारतीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण कर रहे हैं।

२.भारतीय ज्ञान पंरपरा

यह अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) नई दिल्ली में शिक्षा मंत्रालय के तहत एक अभिनव सेल है। इसकी स्थापना अक्टूबर, 2020 में हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतः विषय अनुसंधान को बढ़ावा देना और आगे के शोध और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित करना। जिससे हमारी संस्कृति और विरासत विभिन्न क्षेत्रों में फैले।(4)

३.भारतीय ज्ञान पंरपरा के कार्य

- सभी विश्वविद्यालयों में, राष्ट्रीय संस्थानों में, अनुसंधान एवं प्रयोगशालाओं में सुविधाजनक बनाना।
- विभिन्न परियोजनाओं के वित–पोषण की सुविधा प्रदान करना और अनुसंधान शुरू करने के लिए तंत्र विकसित करना।(5)
- संस्थानों, केन्द्रों और शोधकर्ताओं के विषय–वार अंतः विषय अनुसंधान समूहों की स्थापना करना और साथ ही उनका मार्गदर्शन और निगरानी करना।
- लोकप्रिय योजनाएं बनाना और उन्हें प्रचारित करना।
- भारतीय ज्ञान परंपरा को बढ़ावा देना और उसकी नीतिगत सिफारिश करना।

४.अध्ययन के उद्देश्य

- आदिवासियों में सांस्क्रतिक परम्पराओं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- आदिवासियों के द्वारा अपने ज्ञान के संरक्षण के महत्व के प्रति विशिष्टता का अध्ययन करना।

५.अनुसंधान पद्धति

भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण में आदिवासियों की भूमिका को जानने के लिए केस स्टडी अनुसंधान पद्धति का चुनाव करके साक्षात्कार्य माध्यम से उद्देश्यों के बिन्दुओं की समीक्षा करने का प्रयास किया गया है–

६.साहित्य की समीक्षा

१. **डा. विस्ट अनीता (2024) ने अपने लेख ''आदिवासी समाज एवं उनकी समस्याए''** में बताया कि एक पराजित समूह होते हुए भी आदिवासी समाज ने अपनी भाषा, संस्कृति, परम्पराएं, रीति–रिवाज, जीने की सामूहिक शैली की इस विरासत को जिंदा रखा है।

२. सालवी रेखा और पारीखा जागृति (2018) ने अपने पेपर में ''उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले आदिवासी तथा गैर आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' में बताया कि आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों में काफी अंतर पाया गया। अतः निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के स्तर में सुधार के लिए शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

३. सिंह अंषुल (2021) ने लेख ''आधुनिकीकरण का जनजातीय सामाजि संरचना पर प्रभाव एक गांव का समाजषास्त्रीय अध्ययन'' में बताया कि संयुक्त परिवार के विघटन हो रहे हैं। एकांकी परिवार का महत्व बढ़ रहा है। रीति–रिवाजों और कर्मकाण्डों में भी दिखावा बढ़ रहा है।

४. डॉ. परिहार सावित्री और श्रीमती चौहान (2024) ने अपने शोध पत्र में ''प्राचीन भारतीय ज्ञान पंरपरा और इतिहास'' में बताया कि भारत की भूमि ज्ञान से अंलकृत है, जो कि आधुनिक ज्ञान से पटे हैं। और ज्ञान प्रेमियों के लिए शोध का विषय है।

५. डॉ. जैन मुकेष (2022) ने अपने लेख ''भारतीय ज्ञान पंरपरा व शोध'' में बताया कि अब हमें भारतीय ज्ञान पंरपरा के मूल्यों में आस्था को पुर्नजीवित करना है। तथा इसके लिए आवश्यक है ताकि हम शारीरिक, मानसिक व नैतिक दृष्टिकोण से सम्मुनत होकर पुनः विश्वगुरू के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित कर सकें।

६. डॉ. उकास त्रप्ति (2024) ने अपने शोधपत्र ''भारतीय ज्ञान परम्परा और साहित्य'' में बताया कि भारतीय ज्ञान पंरपरा क्या है? इस जिज्ञासा के मन में उठते ही कल्पना तत्काल वेदों की ओर ले जाती है और वेद हमें भारतीय संस्कृति, ज्ञान और सभ्यता की ओर ले जाते हैं।

७.परिणाम और चर्चा

केस स्टडी (1) श्री छैल बिहारी (उम्र 39) ग्राम व पोस्ट बेला पसुवा के निवासी हैं। सन् 2008 से अमीन संग्रह के रूप में जिला फतेहपुर में नौकरी कर रहे हैं और इनकी पत्नी श्रीमती सुनीता राणा एक ग्रहस्थ महिला है। साक्षात्कर के दौरान इन्होंने बताया कि ये सन् जन 2008 से ही लगातार फतेहपुर में अपने परिवार के साथ निवासी कर रहे हैं। उत्तरदाताओं से चर्चा के समय सांस्कृतिक प्रथाएँ के विषय की बातचीत में यह बताया कि हमारे यहॉ विवाह के बाद विदाई के दौरान केवल लड़की या बहू ही नहीं विदा होती है बल्कि विवाह के समय कन्या पक्ष के सभी जन (जो कि विवाह समारोह में उपस्थित हुए) कन्या के साथ उसके ससुराल जाते हैं। और वहॉ एक रात्रि ठहर कर अगले दिन वर के यहॉ से कन्या पक्ष का विदाई समारोह होने पश्चात् वहॉ से वापस आते हैं। उत्तरदाताओं ने बताया कि बदलाव की पीढ़ी में कुछ बदलाव तो स्वीकार है। लेकिन हम आज भी अपनी सभ्यता और संस्कृति के साथ ही जीते हैं।

केस स्टडी (2) श्री अजय सिंह राणा (उम्र 27) ग्राम छबिया (पश्चिमी लखीमपुर के निवासी है और वर्तमान में रहीम नगर, लखनऊ में अपनी पत्नी श्रीमती लक्ष्मी राणा के साथ निवासी करते हैं। उत्तरदाता अजय सिंह राणा वर्तमान में गैर–सरकारी संस्था में नौकरी करते हैं। और उनकी पत्नी 1090 कॉल सेन्टर में कार्यरत हैं। साक्षात्कार के दौरान उत्तरदाता से हुई उनकी जीवन–शैली की वार्ता से ज्ञात हुआ कि गांव से दूर रहकर बाहरी पहनावे और खान–पान को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु प्रकृति की घनिष्ठता के कारण गांव से आने वाले व्यक्ति से गांव में होने वाली कुछ विशेष सब्जियों वे वहॉ से मंगवाते हैं। उत्तरदाता ने बताया कि अब भी कोई गांव से आ रहा होता है तो हम अपने विशेष भोजन जरूर गांव से मंगवा लेते हैं। उत्तरदाताओं ने बताया हमारे यहॉ घर पर दो कुल देवी का स्थान है। एक घर के अन्दर रसोईघर में और एक घर के बाहर मुख्य द्वार में और इनकी सेवा घर

का मुखिया करता है। हमारा ऐसा मानना है कि जो कुल देवी घर के अन्दर हैं वे हमारी आन्तरिक रूप से रक्षा और घर की धन–धान्य से भरती हैं। इसके पश्चात् जो बाहर के मुख्य द्वार की माता हैं वे हमें बाहरी पीढ़ीयों से मुक्त करती हैं।

केसस्टडी (3) श्री मीना राणा (उम्र 35) पश्चिम छबिया पोस्ट लखीमपुर के निवासी हैं। सन् 2008 से अमीन संग्रह पद पर जिला फतेहपुर में निवास कर रहे हैं। उत्तरदाता से हुए साक्षात्कार के दौरान विषय परंपरा में हुई बात पर उन्होंने अपने विशेष त्यौहारों के रीति–रिवाजों के बारे में बताया। जिसमें उन्होंने दीवाली का उल्लेख किया। छोटी दीवाली या नरक चौदस के दिन लोग अपने जानवरों की पूजा करते हैं। और उनके सींहों को काले रंग से रंगते हैं। उन्होंने बताया कि वे उन जानवरों से कोई भी कार्य नहीं लेते हैं और होली के त्यौहार आठ (08) दिन मनाया जाता है। होलिक दहन के दिन वे होली में चावल और पैसे डालते हैं और फिर होली खेलने के बाद होलिका की राख से भी को टीका लगाते हैं। ग्राम प्रधान के यहॉ पांरपरिक नृत्य कार्यक्रम होते हैं। जो कई दिनों (08) दिन तक चलता है। ग्राम प्रधान के अलावा और भी लोग जिन्हें कार्यक्रम कराना होता है वे कार्यक्रम कराते हैं। फिर एक हफ्ते बाद होली की विदाई का कार्यक्रम होता है। जिसमें गांव के लोग दीया, झाड़ू की सींक लेकर गांव के बाहर जाकर होली विदा करते हैं। जिसे वे खखरेडा फोड़ो कहते हैं।

केसस्टडी (4) श्री लल्लूलाल राणा जिला प्रोबेशन अधिकारी के रूप में जिला फतेहपुर में कार्यरत हैं। उत्तरदाता से खान–पान और जीवन–शैली विषय पर हुई वार्ता पर उन्होंने बताया कि तराई क्षेत्र के निवासी होने के कारण उनके भोजन का मुख्य अंग चावल है। चावल का ही कई तरह के भोजन पदार्थ के रूप में उपयोग किया जाता है। इसके साथ–साथ मांसाहारी खाने को भी प्राथमिकता दी जाती है। जिनमें मुख्य रूप से मछली, चूहा आदि शामिल है। उत्तरदाता ने बताया कि शाकाहारी भोजन पदार्थ का भी उपयोग किया जाता है।

८.भारतीय ज्ञान पंरपरा संरक्षण और आदिवासियों का संबंध

अपनी संस्कृति को खुद से जोड़े रखने वाले आदिवासी भारतीय समाज और भारतीय ज्ञान पंरपरा का अभिन्न अंग है, जो अपनी संस्कृति के मूल से खुद को बना हुआ मानते हैं। और उसके संरक्षण के लिए आधुनिकता का त्याग करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा और आदिवासियों के संबंध में कुछ तथ्य–

१. **मौखिक परंपराः** भारतीय ज्ञान परंपरा और जन–जातीय ज्ञान मुख्य से मौखिक परंपरा(कहानी, कहावतें, लोकगीत आदि) के माध्यम से प्रसारित होती है, जबकि आधुनिक ज्ञान लिखित रिकार्ड औपचारिक शिक्षा आदि रूपों में प्रसारित हो रही है।

२. **प्रकृति से घनिश्ठताः** भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय ज्ञान प्राणाली में दोनों में पृथक घनिष्टता है। दोनो ही प्राकृतिक वातावरण प्रेमी है। और अपने जीवन मूल्यों को पूर्ण करने के लिये प्रकृति को अपनाते है।

३. **पीढ़ीगत संचरणः** जन–जातीय और भारतीय ज्ञान परंपरा दोनो पीढ़ी दर पीढ़ी प्रसारित होती हैं और इसके प्रसारण और सरंक्षण की मुख्य भूमिका बुजुर्गों की होती है कि वे अपने आने वाली पीढ़ी तक इसका प्रसारण करें।

४. **सांस्कृतिक प्रथाएंः** भारतीय ज्ञान परंपरा और जन–जातीय ज्ञान प्रणाली दोनों में सांस्कृतिक प्रथाओं, परंपराओं की एक श्रंखला होती है जो मानव और समाज के ताने–बाने को पूर्ण करती है।

९.भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण में आदिवासियों का महत्व

१. **प्राकृतिक ज्ञानः** जंगलों से निकटता के कारण जन–जातियों में प्रकृति का समृद्ध ज्ञान है, जो पर्यावरणीय आंकलन को बताता है और वे बखूबी जानते हैं कि किस वृक्ष से घर बनना है, किससे हथियार और किसका ईंधन में इस्तेमाल करना है।

२. **चिकित्सा में योगदानः** सदियों से स्वदेशी लोग रोगों से निपटने के लिए कई पौधों का उपयोग कर रहे हैं। जिन्हें पारंम्परिक औषधीय के रूप से स्वीकृति मिली है।

३. **जैसेः** बाउहिनिया परध्यूरिया, जेट्रोफा कर्कस जैसे पौधों को मांसपेशियों में दर्द, बुखार, सिरदर्द और शरीर की सूजन के ईलाज के लिए उपयोग में लिया जाता है।[5]

४. **संरक्षणात्मकताः** आदिवासी लोगों ने कई बनों की जैव–विविधता को सरंक्षित करने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। साथ उन्हें पशुओं के व्यवहार का भी ज्ञान होता है।

५. **आपदा में कमीः** पारंपरिक ज्ञान ने अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह की प्राचीन जन–जातियों को 2004 की सबसे भीषण सुनामी से बचने में मदद की थी।[5]

६. **एकीकृत शिक्षा को बढ़ावा देनाः** भारतीय ज्ञान परंपरा और जन–जातीय ज्ञान प्रणालियों कहानियों, लोकगीतों, लोक कथाओं, आदि में संग्रहीत है। इसलिए यह एकीकृत शिक्षा को बढ़ावा देती है।

७. **लिंगानुपातः** जनजाति समाज का लिंगानुपात उल्लेखनीय है और बलात्कर के मामले भी लगभग शून्य है।[5]

१०.मंत्रालय और नियामक निकायों द्वारा दिशा–निर्देश

- **13.04.2023–भारतीय ज्ञान प्रणाली पर संकाय के प्रशिक्षण/अभिमुखकरण के लिए दिशा–निर्देशः**– यह संकायों को भारतीय ज्ञान पंरपरा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने और प्रेरण कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों के माध्यम से और अधिक जानने और खोज में रूचि को बढ़ावा देने में सक्षम बनाता है।
- **08.05.2023–उच्च शिक्षण संस्थानों में निवासरत कलाकारों/कारीगरों के पैनलीकरण के लिएः**– विद्यार्थियों में कला शिक्षा की एक प्रभावी संरचना विकसित करने के लिए कलाकारों को सहयोग प्रदान करना और नियमित आधार पर शिक्षण अनुसंधान और शैक्षणिक गतिविधियों में कुशल शिक्षक को शामिल करना। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत से लोगों को परिचित करना साथ ही भारतीय विरासत और संस्कृति पर आधारित एकाधिक प्रवेश और निकास कार्यक्रम की पेशकश करना। इसमें मानवीय मूल्यों, वेद, गणित, योग, संस्क्रत, आयुर्वेद, भाषाएँ शामिल हैं।
- **13.06.2023–शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान को भाामिल करने के लिए दिशा–निर्देश** शिक्षा के सभी स्तरों में पाठ्यक्रम भारतीय ज्ञान परंपरा को एकीकृत करके और उसके प्रवाह में असंतुलन को दूर करने का प्रयास करता है।
- **अनिवार्य क्रेडिट घटकः** विश्वविद्यालय सभी विषयों के शिक्षार्थियों को पारंपरिक के ज्ञान के साथ आत्मसात करने के लिए सभी पाठ्यक्रम में लर्नर क्रेडिट पेश कर सकते हैं।
- **क्षेत्रीय पाठ्यक्रम डिजाइन करनाः** राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश विद्यार्थियों के लिए समर्पित पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए अपनी संबंधित मूल संस्कृतियों, कला, शिल्प, परंपराओं आदि का दस्तावेजीकरण कर सकते हैं।
- **नियमित संकाय प्रशिक्षणः** पाठ्यक्रमों पर कक्षा वितरण की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण और अभिविन्यास के लिए माड्यूल डिजाइन किए जा सकते हैं। विशिष्ट भारतीय ज्ञान परंपरा संकाय द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणालियों के विशिष्ट विषयों में शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना करना।
- **सीखने के अवसर प्रदान करनाः** भारतीय ज्ञान प्रणाली छात्र इंटर्नशिप/अप्रेन्टिसशिप के लिए अवसर प्रदान करती है। साथ ही निजी संवाहन कार्यक्रम द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम के साथ मिलकर शिक्षार्थियों को परामर्श भी देती है।

- **शैक्षणिक सामग्री का अनुवादः** शिक्षार्थियों को शामिल करने और स्वदेशी पहचान को संरक्षित करने के लिए भारतीय ज्ञान पंरपरा अपने केन्द्रों से सभी विषयों के लिए शिक्षण सामग्री का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध कराती है।
- **भारतीय ज्ञान परंपरा अनुसंधान को बढ़ावा देनाः** भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रमुख उद्देश्य अनुसंधान को बढ़ावा देना है। जिससे आसानी से सभी तक ज्ञान पहुंच सके।
- **फंड संस्थागत सहायता तंत्रः** भारतीय ज्ञान परंपरा केन्द्रों की स्थापना के माध्यम से संस्थागत सहायता तंत्र स्थापित करें जो देश के विभिन्न हिस्सों में अनुसंधान शिक्षा की गतिविधियों को शुरू करने के लिए उत्प्रेरक होंगे। विभिन्न केन्द्रों की स्थापना के लिए प्रारंभिक वित–पोषण प्रदान करें।
- **जनभागीदारी को बढ़ावा देंः** भारतीय ज्ञान परंपरा के ज्ञान को प्रसारित और लोकप्रिय बनाने के लिए आत्मविश्वासी नागरिकता विकसित करें और प्रतियोंगिताओं, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों, रेडियो, सोशल मीडिया आदि के माध्यम से लोगों को प्रेरित करें।
- **रोजगार के अवसर पैदा करेंः** भारतीय ज्ञान परंपरा कौशल आधरित ज्ञान का सृजन करती है, जिससे रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।[3]

११.अध्ययन का महत्व

परम्पराओं का देश भारत विभिन्नताओं और अखण्डता से पहचाना जाता है परन्तु पश्चिमीकरण और औद्योगिकीकरण का इस पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है। जिसके कारण हमारी संस्कृति और परम्परायें भी कहीं न कहीं संक्षिप्त होती जा रही है। जनजातियां हमारी संस्कृति और परम्पराओं के सरंक्षण की मूर्तियां मानी जाती हैं परन्तु इनमें भी अब परिवर्तन हो रहा है। यह शोध हमारी संस्कृति और परम्पराओं के संरक्षण की भूमिका में अपने योगदान को दर्शाता है और यह मारी संस्कृति की विशिष्टता के लिए अति महत्वपूर्ण है।

१२.निश्कर्ष

देश की धरोहर भारतीय ज्ञान परंपरा क उल्लेखनीय विषय है। इस सफलताएं, चनौतियॉ और शिक्षा वास्तव जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य समग्र स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, प्रवृत्ति पर्यावरण, सतत् विकास जैसे कई सामाजिक चुनौतियों के समाधान और संरक्षण के लिए शोध का समर्थन और सुविधा प्रदान करता है। यह अंतः विषय अनुसंधान को बढ़ावा देने के साथ–साथ सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए संरक्षित और प्रसारण करने के लिए एक अभिनव सेल है। यह हमारी संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारतीय ज्ञान परंपरा में आदिवासी ज्ञान के साथ–साथ स्वदेशी और पारंपरिक शिक्षण पद्धतियां शामिल हैं, जो हमारी संस्कृति और विरासत के संरक्षण के लिए उपयोगी है। आज की आधुनिकता में जनजातियॉ हैं। हमारी संस्कृति और परंपरा के संरक्षण में अपनी पूर्ण भूमिका निभा रही है। आगे आने वाली पीढ़ियों को अपनी संस्कृति की विशेषताओं से अवगत करा रही है। आम भाषा में जंगली कहे जाने वाले ही हमारे पर्यावरण के संचयिका हैं। आदिवासी और भारतीय ज्ञान परंपरा समाज की मुख्यधारा की अलग–अलग व्यवस्थाएं नहीं हैं, बल्कि एक–दूसरे से परस्पर संबंधित हैं। दोनों ही समाज और प्रकृति के विकास और संरक्षण में अपनी मुख्य भूमिका निभाते हैं। भारत का ज्ञान अनादिकाल से संबंध रखता है। भारतीय ज्ञान ने शून्य की खोज से लेकर चन्द्रयान की सफलता जैसे कई प्रत्यक्ष प्रमाण दिए हैं। निरंतर प्रयासों से ही हमने अपने उद्देश्य को पूर्ण किया है और इसी भूमिका और प्रयासों के साथ अपनी आगे आने वाली पीढ़ियों में भी इसका प्रसारण कर सके। इसी उद्देश्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली कार्य करी है।

संदर्भ

१. डॉ. थपलियाल पूनम (2023). उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणालियाँः भारतीय ज्ञान परंपरा में पीजी. पाठ्यक्रम का एक प्रस्ताविक मॉडल/ अनुसंधान प्रकाशन और समीक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल / ISSN-2582-7421 vol.4 No.7
२. आर्य कुमार अमरेन्द्र (2018). भारतीय ज्ञान परंपरा सामाजिक जरूरतों की उपज/मीडिया नवचिंतन।
३. डॉ. माण्डवकरण पवन (2023). भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)। SSRN इलेक्ट्रिानिक जर्नल।
४. डॉ. बिष्ट अनीता (2024). आदिवासी समाज एवं उनकी समस्याएं। इण्टरनेशनल जर्नल–फॉर मल्टीडिशपनरी रिसर्च। E-ISSN-2582-21601
५. सालवी, रेखा और पारीख जागृति (2018). उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले आदिवासी तथा गैर आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन। RNI No. UPBTL/2016/61980 E-ISSN No.-2455-0817
६. सिंह अंशुल (2021). आधुनिकीकरण का जनजातीय सामाजिक संरचना पर प्रभाव! एक गांव का समाजशास्त्रीय अध्ययन। आर.आर. रिसर्च जर्नल। ISSN-No-0005-0601
७. डॉ. परिहार, सावित्री और श्रीमती चौहान, प्रभा (2024). प्राचीन भारतीय ज्ञान पंरपरा और इतिहास। इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इन्हेस्ड रिसर्ज इन एजुकेशन डेवलपमेन्ट। ISSN No.2320-8708
८. डॉ. जैन, मुकेश (2022). भारतीय ज्ञान पंरपरा व शोघ/पीअर–रिप्यूड त्रैमासिक पत्रिका। ISSN No-2582-29481
९. डॉ. उकास, त्रप्ति (2024). भारतीय ज्ञान परम्परा और साहित्य। इन्टरनेशलन जर्नल ऑफ क्रेटिव रिसर्च थाउट। ISSN No-2320-2882
१०. http://vajiramias.com/article/integrating.tribal-knowledge-system-key-to-make-india-a-knowledge-superpower/638e1as709e50509440e47/
११. http://www.printfriendly.com/P/g/8xjs9shttp://eolukemy.com/blog/examine-the-uniquenss-of-tribal-knowledge-system-when-compared